1. परिचय :

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे, सीमान्त किसानों एवं भूमिहीन मजदूरों की आय बढ़ाने में बैकयार्ड पोल्ट्री अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस व्यवसाय में घर के सभी सदस्य जैसे बच्चे, महिलाऐं एवं बूढ़े व्यक्ति सहयोग कर सकते है। बैकयार्ड पोल्ट्री से मिलने वाले उत्पाद जैसे अण्डे एवं मांस अत्यन्त पोषक पूर्ण होते है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छोटे, सीमान्त किसानों एवं भूमिहीन श्रमिकों के लिए ऊर्जा एवं प्रोटीन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बैकयार्ड मुर्गीपालन महत्वपूर्ण स्थाना रखता है। बैकयार्ड मुर्गीपालन अत्यन्त कम संसाधनों से शुरू किया जा सकता है, मुर्गीयों की देशी नस्लों को कम खर्च करके उनकी आवास व्यवस्था, खानपान तथा रखरखाव आदि का प्रबंध किया जाता है।

भारत में व्यवसायिक पैमाने पर लगभग 75 % तथा अव्यवस्थित क्षेत्र में लगभग 25 % मुर्गीपालन होता है। भारत में मुर्गीपालन के क्षेत्र में बहुत अच्छी उन्नति हुई है, यही कारण है कि मुर्गीयों की संख्या 851.81 मिलीयन तक पहुंच गई तथा उत्पादन में भी अत्याधिक वृद्धि देखने को मिली। भारत में वर्ष 2020 में लगभग 106 बिलियन अण्डों का उत्पादन करके प्रति व्यक्ति 81 अण्डे उपलब्ध हुए है, इसी प्रकार से मांस के उत्पादन में लगभग 4.20 मिलियन टन उत्पादन करके प्रति व्यक्ति 3.21 किलोग्राम मांस की उपलब्धता हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में देशी मुर्गीपालन का अधिक प्रचलन है यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसायिक मुर्गीपालन की अपेक्षा देशी मुर्गीपालन की माँग बढ़ी है, ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका को चलाने के लिए देशी नस्लों को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। जिसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश छोटे, सीमान्त किसान एवं भूमिहीन श्रमिक, देशी मुर्गीपालन अत्यन्त प्राचीन काल से करते चले आ रहे है, ऐसी मुर्गीयों का रखरखाव अत्यन्त कम खर्च करके भी किया जा सकता है, यह सिद्ध हो चुका है कि कम खर्च तथा संसाधनों से बैकयार्ड मुर्गीपालन को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा रहा है

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 72.20 % छोटे, सीमान्त किसान व भूमिहीन श्रमिक है, राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छोटे, सीमान्त किसान एवं भूमिहीन श्रमिकों की खेती से होने वाली आमदनी अत्यन्त कम तथा लगातार नहीं है, खेती से मिलने वाली आमदनी इसलिए कम है, क्योंकि ज्यादातर खेती वर्षा आधारित है तथा अनेकों जोखिमों से भरी है। राजस्थान के अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के छोटे, सीमान्त किसानों एवं भूमिहीन श्रमिकों के लिए निरन्तर आमदनी का वैकल्पिक स्त्रोत आंगन में मुर्गीपालन हो सकता है, इस व्यवसाय को अपनाने के लिए शुरू में अत्यन्त कम पूंजी की आवश्यकता पड़ती है तथा आमदनी वर्षभर होती है, निरन्तर आमदनी के साथ–साथ परिवार के सदस्यों का पोषण स्तर सुधारने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है, मुर्गियों से मिलने वाले अण्डे एवं मांस प्रोटीन एवं ऊर्जा के अत्यन्त महत्वपूर्ण स्त्रोत है, बैकयार्ड पोल्ट्री से मिलने वाले अण्डे एवं मांस का मूल्य सामान्य अण्डो एवं मांस की अपेक्षा सदैव अधिक मिलती है, बैकयार्ड मुर्गियों के पालन पोषण पर अत्यन्त कम खर्च करना पडता है, क्योंकि घर में उपलब्ध, रसोई के अवशेष, अनाज, दाल तथा

फलों/सब्जियों के अवशेष मुर्गियों के भोजन के रूप में प्रयोग में लिया जा सकता है, बैकयार्ड मुर्गियों की रोगप्रतिरोधकता अन्य मुर्गियों की अपेक्षा अधिक होती है, यही कारण है कि मुर्गियों में होने वानी अनेकों बीमारियों इन मुर्गियों को प्रभावित नहीं करती है, उच्च प्रतिरोधक क्षमता के कारण ऐसी मुर्गियों लम्बे समय तक अण्डा उत्पादन करती है, अण्डा उत्पादन सम्पन्न होने के बाद यहीं मुर्गियों अच्छे मूल्य पर बाजार में बेच कर अधिक लाभ कमाया जा सकता है, बैकयार्ड मुर्गियों से आवास में अत्यन्त गुणवता वाला स्वाद उपलब्ध होता है, जिसका मूल्य गोबर की खाद से सदैव अधिक मिलता है। बैकयार्ड पोल्ट्री प्राचीन काल से ही भारत में फलता–फूलता रहा है, यह कम समय में, कम पूंजी से चलने वाला एक अत्यन्त लाभकारी व्यवसाय है, भारत के सभी राज्यों में लघु, सीमान्त किसानों एवं भूमिहीन श्रमिकों बैकयार्ड पोल्ट्री को वैकल्पिक आय के साधन तथा परिवार के पोषण स्तर को सुधारने के लिए अपनाया है, बैकयार्ड पोल्ट्री का रोजगार एवं आजीविका के रूप में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है :

2. बैकयार्ड मुर्गीपालन के लाभ :

1. ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न वर्ग के लोगों के लिए आय एवं रोजगार का उत्तम साधन है।
2. कम पूंजी के साथ इस व्यवसाय को बढ़ाया जा सकता है।
3. मुर्गीयों से मिलने वाली खाद से भूमि का उपजाऊ बनाया जा सकता है।
4. कम खर्च करके अधिक लोगों के लिए अण्डा तथा मांस का उत्पादन करके प्रोटीन एवं ऊर्जा की पूर्ति की जा सकती है।
5. अण्डे एवं मांस में अत्यन्त कम मात्रा में कोलेस्ट्रोल पाया जाता हैं।
6. मुर्गीयों से मिलने वाले अण्डे एवं मांस के आंकलन से यह पता चला है कि अण्डा एवं मांस में अत्यन्त कम मात्रा में कोलेस्ट्राल मिलता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में देशी मुर्गियों की मांग अधिक बनी रहती है।

3. बैकयार्ड मुर्गीपालन की विशेषताऐं :

1. द्विउद्देशीय मुर्गी की नस्लों के अण्डों की मांग एवं मूल्य अधिक होना।
2. कम पूंजी एवं इनपुट की आवश्यकता।
3. ब्रूडी नैस की कम आदत।
4. अण्डे एवं मांस की अधिक लोकप्रियता।
5. अपने विरोधियों से लड़ने की क्षमता।
6. लगातार आमदनी एवं रोजगार का साधन।

4. भारत में पायी जाने वाली मुर्गी की देशी नस्लें तथा उनकी विशेषताऐं :

भारत के विभिन्न राज्यों में मुर्गी की देशी नस्लें पायी जाती है, इन नस्लों की अण्डा उत्पादन व मांस उत्पादन क्षमता अत्यन्त कम पायी जाती है, अधिकांश देशी नस्लों का अण्डा उत्पादन 30–40 प्रतिवर्ष है तथा शरीर भार कम होने के कारण मांस भी कम निकलता है,

यही कारण है कि मुर्गी पालक देशी नस्लों में कम रूचि लेते है, भारत में पायी जाने वाली मुर्गी की देशी नस्लें निम्नलिखित तालिका में दर्शायी गयी है :

क्र. सं.	देशी नस्ल का नाम	मुख्य विशेषताऐं
1.	राउथिगीर	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग छः माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 1.8 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.6 किलोग्राम तक हो जाता है, यह एक भारी नस्ल बोडो समुदाय के लोगों के बीच अत्यधिक प्रसिद्ध हो रही है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 60 है।
2.	बुसरा	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग छः माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 1.1 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.0 किलोग्राम तक हो जाता है, यह एक छोटे शरीर भार वाली देशी नस्ल है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 45–55 है।
3.	घाघस	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 5.7 माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 2.1 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.4 किलोग्राम तक हो जाता है, यह एक छोटे शरीर भार वाली नस्ल है, जिसकी कलगी भी छोटी तथा गर्दन गठीली पायी जाती है, शैंक पर पंख पाये जाते है तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 52 है।
4.	हंसली	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 7.2 माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 3.8 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 2.5 किलोग्राम तक हो जाता है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 67 है।
5.	उत्तरा	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 5.5 माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 1.3 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.1 किलोग्राम तक हो जाता है, नस्ल का शरीर सुदृढ़, गठिला तथा पंखों की मजबूती के कारण तीव्र उड़ने में सक्षम नस्ल है।
6.	अंकेलश्वर	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग छः माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 1.8 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.6 किलोग्राम तक हो जाता है, यह एक छोटे शरीर भार वाली नस्ल है, जिसको गुजरात के भरूच व नर्मदा जिले के आदिवासी लोगों ने पसंद किया है तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 78–80 है।

7.	असील	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 6.7 माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 3–5 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 3.0 किलोग्राम तक हो जाता है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 30–35 है। यह एक लड़ने वाली तेज तरार फर्तिली नस्ल है, जिसके शरीर की लम्बाई 28 इंच तक होती है।
8.	हरिगंट्टा काली	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 5.6 माह में आ जाती है, परिपक्व नर का शरीर भार लगभग 1.3 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.10 किलोग्राम तक हो जाता है, शरीर की बनावट एक अच्छी अण्डा देने वाली मुर्गी जैसी होती है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 45 है।
9.	चित्र गौंग	यह उत्तर–पूर्व के प्रदेशों में एक महत्वपूर्ण नस्ल है नर का शरीर भार लगभग 3.5–4.5 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 3.0–4.0 किलोग्राम तक हो जाता है, यह एक लड़ाकू नस्ल के लिए प्रसिद्ध है।
10.	डैंकी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 7.4 माह पर आती है नर का शरीर भार लगभग 3.1 किलोग्राम तथा मादा का 2.2 किलोग्राम होता है एक भारी नस्ल जिसकी प्लूमेज अत्यधिक चमकीली तथा सुदृढ़ सिंगल कलगी के रूप में मशहूर है वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 30–32 है।
11.	कडकनाथ	इस नस्ल की मुर्गीयाँ लगभग छः माह पर लैगिक परिपक्वता प्रद्धर्शित करती है नर का औसत शरीर का भार 1.6 किलोग्राम तथा मुर्गी यानी मादा का औसत शरीर भार लगभग 1.2 किलोग्राम होता है नर एवं मादा पक्षीयो मे रंग गहरा ब्राउन काला होता है कलगी व वैअल व जीभ का रंग परयन होता है ज्यादात्तर आन्तरिक अंग काला पिगमैन्ट प्रदर्शित करते है इस नस्ल में औसत अण्डे का उत्पादन लगभग 80 है।
12.	कालास्थी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता देर से (7.2 माह) परिलक्षित होती है नर का औसत शरीर भार 2.5 किलोग्राम तथा मादा का 1.8 किलोग्राम होता है वार्षिक अण्डा उत्पादन 34 होता है।
13.	कोनायेन	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 6–7 माह पर परिलक्षित होती है नर का औसत शरीर भार 3.0 किलोग्राम तथा मादा का 2.3 किलो ग्राम होता है शैक छोटा, जाघ लम्बी तथा लम्बा शरीर मजबूत सीधा शरीर तथा सिर सदैव सीधा मिलता है वार्षिक अण्डे का उत्पादन 35 होता है।

14.	कश्मीर फेवरोला	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 7 माह पर परिलक्षित होती है छोटे आकार का शरीर तथा शरीर भार लगभग 1.0 किलोग्राम होता है वार्षिक अण्डे का उत्पादन 70–75 होता है।
15.	मेवारी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 6.8 माह पर परिलक्षित होती है नर का शरीर भार लगभग 2.0 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.2 किलोग्राम होता है वार्षिक अण्डे का उत्पादन 43 होता है।
16.	मीरी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 7.0 माह पर प्रद्धर्शित होती है नर व मादा का शरीर भार लगभग 1.50 किलोग्राम तक होता है यह नस्ल मीरी आदिवासी लोगो में अत्यधिक लोकप्रिय है यह द्विउद्देश्यीय नस्ल लगभग 62–65 अण्डे देती है।
17.	पंजाब ब्राउन	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 5.5 महिने है नर का शरीर भार लगभग 2.1 किलोग्राम तथा मादा का 1.50 किलोग्राम होता है यह एक मांस के लिए प्रसिद्ध ब्राउन प्यूमेज वाली नस्ल है इस नस्ल की चोंच पीले रंग की होती है वार्षिक अण्डा उत्पादन 70 है।
18.	तल्लीचेरी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग छःमाह पर प्रद्धर्शित होती है नर का परिपक्व शरीर भार 1.60 किलोग्रम तथा मादा का 1.20 किलोग्राम होता है इस नस्ल की मुर्गीयो का प्लमेज रंग काले से ग्रे पाया जाता है वार्षिक अण्डा उत्पादन 70 है।

मुर्गी की स्थानीय नस्लों का महत्वः–

1. स्थानीय नस्ले शीघ्र स्थापित होकर अच्छी बढवार परिपक्वता प्रद्धशित करती है तथा कम व निम्न प्रबन्ध के अन्तर्गत अच्छा उत्तपादन देती है।
2. कम देख रेख व दवाई आदि की आवश्यकता होती है।
3. स्थानीय दुश्मनो से स्वय रक्षा करना।
4. स्थानीय मुर्गियाँ प्राय अच्छी बुडिग आदतो के कारण अपने अण्डों से बच्चे/चूजे निकालती है।
5. स्थानीय लोग देशी नस्लों की मुर्गियों का उत्तपाद जैसे अण्डे या मांस पसन्द करते है।
6. अधिकाश लोगो को रंगीन पंखो वाली मुर्गियों के अण्डे व मांस को सफेद रंग की मुर्गियों की अपेक्षा अधिक पसन्द करते है।
7. कुछ लोग रंगीन पंखो वाली मुर्गियों को धर्म के अनुसार अधिक महत्व देते है।

देशी नस्लों में निम्नलिखित बाधाऐं पायी गई, जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रसिद्धता नहीं मिल सकी :

1. **धीमी गति से वृद्धि :**

अधिकांश नस्लों में शारीरिक वृद्धि धीमी पायी गई है, इसी कारण से मुर्गीपालक देशी नस्लों में कम रूझान दिखाते है, पोषण पर अधिक खर्च होने की वजह से लाभ का प्रतिशत घटता है।

2. **कम शरीर भार :**

मांस के लिए मुर्गियों का शरीर भार अधिक होना चाहिए, परन्तु देशी नस्लों में शरीर भार कम होने के कारण मुर्गीपालक कम रूझान दिखाते है, कम शरीर भार होने की वजह से लाभ का प्रतिशत घटता है।

3. **देशी मुर्गीयों में देरी से लैंगिक परिपक्वता :**

उन्नत नस्लों की तुलना में देशी नस्लों में लैंगिक परिपक्वता देरी से प्रदर्शित होती है, जिससे मुर्गियों के रखरखाव पर अधिक खर्च आता है तथा मुर्गी पालकों को कम लाभ मिलता है।

4. **कम अण्डा उत्पादन क्षमता :**

देशी नस्लों का अण्डा उत्पादन कम होता है, जबकि मुर्गियों के रखरखाव पर अधिक खर्च आता है, मुर्गीपालकों को अधिक समय के बाद कम लाभ मिलता है, देशी मुर्गियों में अण्डों की सघनता भी कम होती है, यह देशी मुर्गीपालन का सबसे महत्वपूर्ण कारक माना जाता है।

5. **अण्डे का वजन कम होना :**

देशी मुर्गी में प्राय : अण्डों का वनज कम पाया जाता है, जिससे ग्राहक अधिक मूल्य देने में छिछकते है, अधिक समय में कम व छोटे आकार के अण्डे देशी मुर्गीपालन के प्रति रूझान को प्रभावित करते है, यही कारण है कि देशी मुर्गीपालन में कम लोगों का रूझान है।

6. **लम्बे काल तक ब्रूडी लक्षण परिलक्षित होना :**

देशी मुर्गियों में अधिक समय तक ब्रूडी लक्षण देखने को मिलते है, अधिक समय तक ब्रूडी लक्षण होने से अण्डे का उत्पादन कम हो जाता है तथा देशी मुर्गी पालन में लाभ घटने लगता है तथा मुर्गीपालकों का रूझान कम होने लगता है।

5. भारत में विकसित की गई द्विउद्देशीय मुर्गी की नस्लें :

भारत के वैज्ञानिकों ने देशी मुर्गियों की उत्पादन क्षमता को देखकर उनका उन्नत नस्लों के साथ क्रॉसिंग कराया गया, जिससे द्विउद्देशीय नस्लों में अण्डा उत्पादन के साथ–साथ मांस की मात्रा भी बढ़ी। द्विउद्देशीय नस्लों में अण्डा, मांस वृद्धि के साथ–साथ रोगप्रतिरोधकता क्षमता भी अधिक पायी गयी। मुर्गियों के संकरण का अधिकांश कार्य केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली, पोल्ट्री अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद तथा राज्यों के कृषि

विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं के द्वारा किया गया, जिसका ब्यौरा नस्ल तथा उनकी श्रेणीवार निम्नलिखित तालिका में दिया गया :

क्र. सं.	नस्ल	श्रेणी	नस्ल कहां विकसित हुई
1.	कैरी निर्भिक	द्विउद्देशीय	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
2.	कैरी श्यामा	द्विउद्देशीय	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
3.	कैरी उपकारी	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
4.	कैरी हितकारी	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
5.	कैरी देवेन्द्रा	द्विउद्देशीय	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
6.	कैरी सोनाली	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
7.	कैरी प्रिया	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, बरेली
8.	वनराजा	द्विउद्देशीय	पोल्ट्री अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
9.	ग्राम प्रिया	द्विउद्देशीय	पोल्ट्री अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
10.	श्री निधि	द्विउद्देशीय	पोल्ट्री अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद
11.	स्वर्णधारा	द्विउद्देशीय	कृषि विश्वविद्यालय, बैंगलोर
12.	गिरिराजा	द्विउद्देशीय	कृषि विश्वविद्यालय, बैंगलोर
13.	कृष्णा–जे	द्विउद्देशीय	जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
14.	नन्दनम	द्विउद्देशीय	तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय, चेन्नई
15.	कृषि प्रिया	द्विउद्देशीय	केरला कृषि विश्वविद्यालय, मनूथी, त्रिचूर
16.	ग्राम लक्ष्मी	अण्डे के लिए	केरला कृषि विश्वविद्यालय, मनूथी, त्रिचूर
17.	क्रोयलर	द्विउद्देशीय	कैग फार्म, गुडगांव, हरियाणा
18.	झरसिम	द्विउद्देशीय	बिहार कृषि विश्वविद्यालय, रांची
19.	प्रतापधन	द्विउद्देशीय	महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर
20.	कामरूपा	द्विउद्देशीय	असम कृषि विश्वविद्यालय, गुवाहटी
21.	कलिंगा ब्राउन	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संगठन, बैंगलोर
22.	कावेरी	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संगठन, बैंगलोर
23.	चेब्रो	मांस के लिए	केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संगठन, बैंगलोर
24.	सतपुरा देशी	द्विउद्देशीय	यशवंत एग्रीटेक प्रा.लि., बैंगलोर
25.	निकोबारी	अण्डे के लिए	केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, पोट्रब्लेयर
26.	गिरिरानी	द्विउद्देशीय	कृषि विश्वविद्यालय, बैंगलोर

6. उन्नत बैकयार्ड द्विउद्देशीय मुर्गी की नस्लों की विशेषताऐं :

भारत की देशी नस्लों की अनेकों सीमाऐं होने के कारण अनुसंधान संस्थानों, निजी संस्थानों ने अनेकों प्रयोगों के तहत उन्नत नस्लों का विकास किया है, यह नस्लें निम्न लिखित कारणों से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रसिद्ध हो रही है :

1. तीव्र गति से शरीर भार बढ़ना।

2. कम आयु पर लैंगिक परिपक्वता आना।
3. कम आयु पर अण्डे का उत्पादन करना।
4. कम इनपुट की आवश्यकता होना।
5. अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता होना।
6. अच्छा जीवन काल व आर्कषक पंखों का रंग।
7. देशी नस्लों के जैसे ब्राऊन रंग के अण्डे प्राप्त होना।
8. कम समय में अधिक अण्डों का उत्पादन।
9. अत्यधिक नस्लों की सभी क्षेत्रों में उपलब्धता।
10. कम खर्च से अधिक लाभ की प्राप्ति।

7. उन्नत बैकयार्ड मुर्गीपालन :

पिछले कुछ वर्षों में अनुसंधान में लगे वैज्ञानिकों ने अनेकों अधिक अण्डे देने वाली मुर्गी की नस्लें विकसित की है, जिनके मुख्य लक्षणों जैसे शरीर वृद्धि, शरीर भार, बीमारियों से लड़ने के लिए रोगराधक क्षमताा तथा अधिक अण्डे एवं मांस के उत्पादन के कारण प्रसिद्ध हो रही है, सभी नई द्विउद्देशीय विकसित नस्लों के अण्डे देशी अण्डों से मिलते जुलते है, इन नई विकसित नस्लों ने खुले स्वतंत्र पद्धति के अन्तर्गत 140–170 अण्डों का उत्पादन किया है इन नस्लों के नर का परिपक्व वजन 3–4 किलो तथा मुर्गियों का वजन 2.0 से 2.5 किलोग्राम तक पाया जाता है, नई विकसित द्विउद्देशीय नस्लों का वर्णन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

क्र. सं.	द्विउद्देशीय नस्ल का नाम	मुख्य विशेषताऐं
1.	ग्रामप्रिया	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 170–175 दिनों में आ जाती है, छः सप्ताह की आयु पर शरीर भार लगभग 2.0 किलोग्राम तक हो जाता है, वार्षिक अण्डे का उत्पादन लगभग 170–190 तक पाया जाता है।
2.	निर्भिक	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 175–180 दिन में आ जाती है, लगभग 20 सप्ताह की आयु पर नर का शरीर भार लगभग 2.0 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.5 किलोग्राम तक हो जाता है, निर्भिक भारतीय देशी नस्ल का असील के साथ क्रॉस है तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 200 है। यह नस्ल केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, बरेली में विकसित की गई है।
3.	हितकारी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 175–180 दिन में आ जाती है, लगभग 20 सप्ताह की आयु पर नर का शरीर भार लगभग 1.8 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.5 किलोग्राम तक हो जाता है, इस नस्ल का विकास नैकिड नैक व कैरी रैड के क्रास द्वारा किया

		गया है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 200 है। यह नस्ल केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, बरेली में विकसित की गई है।
4.	उपकारी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 165 दिन में आ जाती है, लगभग 20 सप्ताह की आयु पर नर का शरीर भार लगभग 1.6 किलोग्राम तथा मादा का शरीर भार 1.2 किलोग्राम तक हो जाता है, इस नस्ल का विकास भारतीय देशी नस्ल को कैरी रैड के क्रास द्वारा किया गया है, तथा वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 220 है।
5.	निकोबारी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता लगभग 6.6 माह पर प्रद्धर्शित होती है नर का परिपक्व शरीर भार लगभग 1.8 किलोग्राम तथा मादा का 1.3 किलोग्राम होता है इस नस्ल का शरीर गठिला तथा छोटा होता है द्विउद्देशीय नस्लों में लगातार अधिक अण्डे देने वाली नस्ल निकाबारी है इस नस्ल का वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 148 है।
6.	कैरी सोनाली	इस नस्ल का दूसरा नाम गोल्डन –92 है इन नस्ल को कैरी संस्थान ने सफेद लैगहार्न को रोड आइलैण्ड रैड के साथ क्रास करके बनाया है इस नस्ल की मुख्य विशेषता यह है कि युवा मुर्गीयाँ 18–19 सप्ताह की आयु में अण्डे देना शुरू कर देती है सर्वाधिक अण्डे का उत्पादन 27–29 सप्ताह पर प्रद्धशित होता है तथा 50 प्रतिशत अण्डे का उत्पादन 155 दिन पर पूरा हो जाता है इस नस्ल का अण्डा उत्पादन सफेद लैगर्होन के समान है लगभग 280–290 अण्डे अच्छे प्रबन्ध के साथ उत्पन्न किये जा सकते है
7.	वनराजा	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 175–180 दिन में आ जाती है लैंगिक परिपक्वता के समय शरीर भार 2–2.2 किलोग्राम हो जाता है यह नस्ल पाल्ट्री निदेशालय हैदराबाद तेलंगाना में विकसीत की गई है इस नस्ल में छः सप्ताह की आयु पर शरीर भार 0.65–0.75 किलोग्राम हो जाता है वार्षिक अण्डे का उत्तपादन 110 है।
8.	कैरी देविन्द्रा	इस नस्ल का निर्माण बरेली स्थित कैरी संस्थान ने रंगीन ब्रायलर सिन्थेटिक नस्ल के मुर्गे को रोड आई लैण्ड रैड मुर्गी की लाईन क्रास कराया जाता है इस नस्ल में लैगिक परिपक्वता 155–160 दिन होती है 8 सप्ताह की आयु पर फीड कनवरस्न का अनुपात 2.5–2.6 होता है वार्षिक अण्डे का उत्पादन लगभग 200 है।
9.	कृषि ब्रो	इस नस्ल में औसत परिपक्व शरीर भार 1.5 किलोग्राम होता है छः सप्ताह की आयु पर फीड कनवरसन की अनुपात 2.0 होती है।

10.	कैरी ब्रो विशाल	यह नस्ल कैरी ब्रो 91 के नाम से भी जाती है सात सप्ताह की आयु पर औसत शरीर भार लगभग 2–2.5 किलोग्राम हो जाता है।
11.	जारसिम	इस नस्ल का छः सप्ताह की आयु पर शरीर भार 0.4–0.5 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल में लैगिक परिपक्वता 175–180 दिन होती है लैगिक परिपक्वता के समय शरीर भार 1.6–1.8 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल की वार्षिक अण्डे उत्पादन क्षमता 165–170 होती है यह नस्ल बिहार कृषि विश्वविद्यालय, रांची द्वारा विकसीत की गई है।
12.	कामरूपा	इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर औसत शरीर भार 1.3–2.2 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल की उत्तपति के लिए तीन नस्लो का प्रयोग में लिया गया है। जैसे असम लोकल 25 प्रतिशत रंगीन ब्रायलर 25 प्रतिशत डलहैम रेड 50 प्रतिशत इस नस्ल का वार्षिक अण्डा उत्तपादन 120 – 130 है यह नस्ल असम कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किया है।
13.	नन्दनम – I	इस नस्ल में 12 सप्ताह की आयु पर शरीर भार लगभग एक किलोग्राम हो जाता है शरीर पर पंखो का रंग लाल होता है यह नस्ल ब्राउन रंग के अण्डों एवं उच्च अर्वरता के मशहूर है यह नस्ल तमिलनाडू पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय, चैन्नई में विकसित की गई है वार्षिक अण्डा उत्तपादन 180 है।
14.	नन्दनम – II	यह नस्ल भी तमिलनाडू पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय, चैन्नई द्वारा विकसित की गई है आठ सप्ताह की आयु पर शरीर का भार लगभग 1.44 किलोग्राम हो जाता है फीड कनवरसन क्षमता 2. 66 है यह नस्ल पंखो के रंगो के कारण अत्यन्त आकर्षिक करती है।
15.	कैरी ब्रो धनराज	इस नस्ल मे सात सप्ताह पर शरीर भार लगभग 2.0 किलोग्राम हो जाता है सात सप्ताह की आयु पर फीड कनवरसन क्षमता 1.92 है।
16.	कैरी ब्रो ट्रोपिकाना	इस नस्ल में सात सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.8 किलोग्राम हो जाता है गरम व नम क्षेत्रों के लिए उत्तम नस्ल है फीड करवरसन अनुपात सात सप्ताह की आयु पर 2.11 है यह नस्ल बरेली स्थित कैरी संस्थान में विकसित की गई है।
17.	कैरी ब्रो मत्युन्जय	इस नस्ल में सात सप्ताह की आयु पर शरीर लगभग 2.0 किलोग्राम हो जाता है यह नस्ल गर्म एवं शुष्क प्रदेशो के उत्तम है यह नस्ल बरेली स्थित कैरी संस्थान द्वारा विकसित किया गया है फीड कनवरसन अनुपात छः सप्ताह की आयु पर 1.95 तथा सात सप्ताह की आयु पर 2.11 है

18.	असील क्रास	इस नस्ल में 15 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.2 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल में दो रंग यानी असील काला व असील पीला मुख्यता मिलते है औसत वार्षिक अण्डा उत्तपादन 120–140 है नस्ल को केन्द्रीय पोल्ट्री संस्थान द्वारा विकसित किया है।
19.	कैरी प्रिया	यह नस्ल बरेली स्थित कैरी संस्थान द्वारा सफेद लैगहार्न को आई एल आई–80 के साथ क्रास करके विकसित किया है लैगिक परिपक्वता 17–18 सप्ताह पर आ जाती है इस नस्ल में 50 प्रतिशत अण्डे का उत्पादन 150 दिन में पूरा हो जाता है अण्डे का औसत वार्षिक अत्पादन 298 है।
20.	कैरी श्यामा	इस नस्ल में लैगिक परिपक्वता 170 दिन है नर का परिपक्वता शरीर भार 1.4 किलोग्राम तथा मादा का 1.1 किलोग्राम होता है यह नस्ल कैरी संस्थान द्वारा भारतीय प्रसिद्ध नस्ल कडकनाथ को कैरीरेड के साथ क्रास करके विकसित किया है वार्षिक अण्डा उत्पादन लगभग 210 है कैरी श्याम का मांस प्रोटीन इसके मांस की माँग अधिक है।
21.	अथूलिया	यह नस्ल केरला कृषि विश्वविद्यालय, मनूथी द्वारा विकसित किया गया है इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 123 दिन में आ जाती है इस नस्ल में 50 प्रतिशत अण्डों का उत्पादन 145 दिन में हो जाता है इस नस्ल में 72 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.5 किलोग्राम हो जाता है वार्षिक अण्डा उत्पादन 290–300 पाया गया है।
22.	कलिंग ब्राउन	यह नस्ल केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संस्थान द्वारा विकसित की गई है लैंगिक परिपक्वता 122 दिन में आ जाती है इस नस्ल में 72 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.70 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल का वार्षिक अण्डा उत्पादन 265–275 है इस नस्ल में 50 प्रतिशत अण्डे का उत्पादन 150–155 दिन में हो जाता है।
23.	कावेरी	इस नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 183 दिन में आती है यह नस्ल केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संस्थान बैंगलूरू द्वारा विकसीत की गई है इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 2.20 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल में लैगिक परिपक्वता 183 दिन वार्षिक अण्डे का उत्तपादन 130–140 है।
24.	ग्राम लक्ष्मी	यह नस्ल केरला कृषि विश्वविद्यालय, मनूथी द्वारा विकसीत की है इस नस्ल में 72 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.7 किलोग्राम है इन नस्ल में लैंगिक परिपक्वता 160 दिन में आ जाती है तथा 50 प्रतिशत अण्डो का उत्तपादन 180 दिनो में हो जाता है इस नस्ल में 72 सप्ताह की आयु पर 180–200 अण्डों का उतपादन पाया गया।

25.	कृषिलेयर	यह नस्ल भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पोल्ट्री निदेशालय हैदराबाद तेंलगाना में विकसित की गई इस नस्ल का 72 सप्ताह की आयु पर कुल अण्डा उत्पादन 270–280 पाया गया है इस नस्ल का 72 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.7 किलोग्राम है।
26.	श्री नीधि	इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर शरीर भार लगभग 1.7–2.0 किलोग्राम हो जाता है नस्ल में वार्षिक अण्डा उत्पादन 165–170 दिन पर आता है यह नस्ल पोल्ट्री निदेशालय हैदराबाद तेंलगाना में विकसित की गई है।
27.	चैब्रो	इस नस्ल में आठ सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.6–1.7 किलोग्राम हो जाता है इस नस्ल में 26 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 2.4–2. 5 किलोग्राम हो जाता है वार्षिक अण्डा उत्पादन 170–180 है फीड कनवरजन क्षमता 2.48 है यह नस्ल केन्द्रीय पोल्ट्री विकास संस्थान बेगलूरू (कर्नाटक) में किया गया यह नस्ल बैंक यार्ड मुर्गीपालन के लिए उत्तम है।
28.	नर्मदा निधि	इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.2–1.7 होता है यह नस्ल कडकनाथ एवं उन्नत ब्रोयलर (जबलपुर रंगीन) को क्रास करके बनाया गया है मुर्गीयाँ 161 दिन की आयु पर अण्डा उत्तपादन करती है लगभग 181 अण्डो का उत्तपादन करती है।
29.	हिम समृद्धि	इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.2–1.7 किलोग्राम हो जाता है प्रथम अण्डा देने की आयु 170–190 दिन है वार्षिक अण्डा उत्पादन 140–170 है यह नस्ल हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में विकसीत किया गया है।
30.	बनाश्री	इस नस्ल में 20 सप्ताह की आयु पर शरीर भार 1.1– 1.2 किलोग्राम हो जाता है प्रथम अण्डा उत्पादन लगभग 190–200 दिन की आयु पर आ जाता है वार्षिक अण्डा उत्पादन 100–120 है यह नस्ल पोल्ट्री निदेशालय हैदराबाद तेंलगाना में विकसीत की है।

8. मुख्य द्विउद्देशीय बैकयार्ड नस्लों का संक्षिप्त ब्यौरा : –

विभिन्न अनुसंधान संस्थानों, पोल्ट्री अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद तेंलगाना एवं कृषि विश्वविद्यालयों के द्वारा अनेकों द्विउद्देशीय मुर्गी की नस्लों को विकसित किया गया, जिसके कारण उनके उत्पादन लक्षणों में देशी मुर्गियों की तुलना अत्याधिक परिवर्तन देखा गया, जिनका संक्षिप्त ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

नस्ल	प्रथम अण्डा देने की आयु दिनों में	8 सप्ताह पर शरीर भार (किलोग्राम)	40 सप्ताह पर शरीर भार (किलोग्राम)	वार्षिक अण्डा उत्तपादन
गिरिराजा	160–170	1.6–1.70	3.0–5.0	140–150

स्वर्णधारा	160–170	1.0–1.20	2.5–4.0	180–190
प्रतापधन	125–130	1.3–2.70	3.0–4.0	160–161

उपरोक्त सभी द्विउद्देशीय बैंकयार्ड नस्लों में 08 सप्ताह की आयु पर शरीर भार में वृद्धि 1.2–1.4 किलोग्राम पायी गयी है शरीर भार में वृद्धि मुख्यतः मुर्गीयों को दिया जाने वाले भोजन की गुणवता तथा मात्रा पर निर्भर करती है प्रबन्ध का शरीर भार ग्रहण करने में विशेष योगदान है अच्छे शरीर भार के लिए इन नस्लो की पोषण आवश्यकता का सही अनुमान लगाना तथा पोषक पूरको द्वारा उन्हे पूरा करना अत्यन्त आवश्यक है।

9. **मुर्गी पालन की विधियां :** – मुर्गी पालन में प्रचलित निम्नलिखित तीन विधियाँ है।

A. **स्वतन्त्र विचरण विधि :** – यह एक अत्यन्त प्राचीन विधि है इस विधि में कुछ मुर्गियों को पाला जाता है यह विधि छोटे स्तर पर कुछ स्थानों पर अपनाई गयी है इस विधि में मुर्गी आवास के पास खुला स्थान मुर्गियो के पेट भरने के लिए रखा जाता है सभी मुर्गियों को 7–8 घण्टे मुर्गीघर से बाहर पेट भरने के लिए छोडा जाता है मुर्गिया पूरे क्षेत्र में घूम फिर अपना पेट भर लेती है सायंकाल होने पर सभी मुर्गियों को घर के अन्दर बन्द कर दिया जाता है

स्वंतन्त्र विधि के लाभ : –

1. यह अत्यन्त सरल एवं कम खर्च से शुरू की जाने वाली विधि है।
2. केवल छोटे स्तर पर लागू किया जा सकता है ।
3. प्राचीन काल में प्रयोग में ली जाती थी।

हानियाँ : –

1. मुर्गिया असुक्षित रहती है।
2. केवल छोटे स्तर पर ही लागू कर सकते है।
3. मुर्गियों का पोषण पूरा नहीं हो पाता ।

B. **सघन विछावन विधि :** –यह विधि अत्यन्त सरल एवं कम खर्च वाली है उपयुक्त कमरे या शैड को तैयार करके मुर्गी पालन किया जाता है कमरे या शैड के अन्दर 6–9 इंच उँची बिछावन की परत बिछा दी जाती है बिछावन के लिए गेहूँ का भूसा या लकडी का बुरादा स्वोत्तम माना गया है यही बिछावन मुर्गियों के लिए आरामदायक गद्दे का कार्य करता है बिछावन में पैदा होने वाले कीट भी मुर्गियो के आहार का कार्य करते है इस विधि में प्रति मुर्गी 1.5–2.0 वर्ग फीट स्थान दिया जाता है अण्डा उत्पादन के बाद बिछावन अच्छा खाद बन जाता है लगभग 15 मुर्गियों से 4–5 कुन्टल उत्तम खाद प्राप्त होती है

सघन बिछावन विधि के लाभ : –

1. कम खर्च से शुरू की जा सकती है।
2. किसी तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं।
3. मुर्गियों के लिए प्राकृतिक वातावरण मिलता है

4. अत्यन्त सरल एवं लाभकारी विधि है।

हानियाँ : –

1. बिछावन में नमी होने पर अमोनिया बनती है जिसके कारण मुर्गियों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
2. बिमारियो के आने की संभावना बनी रहती है।
3. लापरवाही के कारण मुर्गीयों का स्वस्थ्य एवं उत्पादन प्रभावित होता है।

C. **पिंजरा पद्धति या बैटरी पद्धति : –** यह अत्यन्त वैज्ञानिक तथा आधुनिक पद्धति पिंजरा को वैज्ञानिक विधि से बनाकर उन्हे पके आवास में क्रम से लगाया जाता है एक पिंजरे का आकार 18X16X15 ईच (लगभग) होता है जिसमे 2–3 मुर्गियाँ रखना अच्छा माना जाता है इस पद्धति में मुर्गियों के लिए फीड एवं पानी स्वचालित तरिके से दिया जाता है यह अत्यन्त प्रभावी पद्धति है लेकिन इस पद्धति में मुर्गियों को प्राकृतिक वातावरण नहीं मिलता है परन्तु अण्डे का आकार बिछावन विधि से अधिक मिलता है मुर्गिया अधिक उर्जा अण्डा उत्पादन में लगाती है इस पद्धति में बिछावन विधि की अपेक्षा गन्दी हवा कम पैदा होती है यह कारण है कि मुर्गियो का स्वास्थ्य बिछावन विधि की अपेक्षा अच्छा रहता है।

पिंजरा पद्धति के लाभ : –

1. अण्डा उत्पादन की अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति है।
2. बिमारियाँ आने की संभावनाए कम होती है।
3. अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति होन के कारण पूरे विश्व में अपनाया गया है।

हानियाँ : –

1. अधिक खर्चिली पद्धति है ।
2. अधिक तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।
3. केवल बडे स्तर पर संभव है।

10. चूजों की ब्रूडिंग : – बूडिंग से अभिप्राय यह है कि बच्चों को कृत्रिम रूप से नियंत्रित तापमान प्रदान करके सुरक्षित शरीर वृद्धि एवं विकास कराना

आयु सप्ताह में	तापमान $^{\circ}$ F में	रिमार्क
0–1	95	कमरे में यदि चूजें समान रूप से घूम रहे तब यह समझ ले कि तापमान सही रहा है।
1–2	90	
2–3	85	
3–4	80	
>4	75	

चूजों को प्रथम तीन सप्ताह की आयु तक 24 घण्टे बिजली के बल्ब से रोशनी दी जानी चाहिए। आठ सप्ताह की आयु तक 2 घण्टे प्रति सप्ताह रोशनी घटाई जा सकती है यानी आठ सप्ताह की आयु पर 16 घण्टे रोशनी प्रदान करना। चूजों की अच्छी बढ़वार के

लिए बूडिंग प्रकियाँ ठीक ढंग से पूरी करना एक बूडर से लगभग 100–200 चूजों को गर्मी प्रदान की जा सकती है पहले तीन सप्ताह के दौरान लगभग 2 बार मुर्गी एक बच्चे की मिलनी चाहिबए एक ब्रूडर का आकार 6′4′2′ का होना चाहिए ब्रूडर लकडी या टिन का हो सकता है। ब्रूडर के अन्दर 100–100 वाट के चार बल्बर लगा देने चाहिए शैड या कमरे के अन्दर अच्छी श्रेणी का लिटर बिछाया जाता है लीटर के लिए गेहूँ का भूसा, चावल की भूसी या लकडी का बुरादा आवश्यक बिछाया जाना चाहिए शुरू में लीटर की मोटाई 6′–9′ रखनी चाहिए तथा बाद में लीटर की परत को कम किया जाता है। बुडर को शुरू में चैंक करके ही लगाना चाहिए । तथा निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. ब्रूडर के सभी विद्युत पाइंट को चैक करके देख लेना चाहिए।
2. चूजों के आने से पहले बल्ब चालू कर दे तथा तापमान 95°F स्थिर कर देवें।
3. पहले सप्ताह के बाद प्रत्येक सप्ताह 5°F तापमान कम कर देना चाहिए।
4. शुरू के सप्ताह में यदि बिजली चली जाये तब अन्य स्त्रोत से चूजों को गर्मी देवें।
5. प्रतिदिन भ्रमण करे तथा सभी क्रियाओं को चैक करें।

11. चूजों के लिए रोशनी प्रबन्ध : –

चूजों के अच्छे स्वास्थ्य एवं शारीरिक वृद्धि के लिए रोशनी का अत्यन्त महत्व है, यदि कमरे के फर्श से आठ फीट की उचाँई पर 60 वाट का बल्ब लगाया जाये तब 100 वर्गफीट के लिए रोशनी पर्याप्त होगी। अतः ब्रूडर हाउस में निम्न सारणी के अनुसार रोशनी का प्रबंध चूजों के लिए करना चाहिए :

Age	Light in hours
0-3 सप्ताह तक	24 घण्टे
4-8 सप्ताह तक	14 घण्टे
9-16 सप्ताह तक	14 घण्टे

12. छः सप्ताह की आयु के बाद चूजों का स्वास्थ्य प्रबन्ध : –

सभी ग्रोवर को दिन के समय में खुले स्थान पर घूमने के लिए छोड़ देना चाहिए तथा रात्री के समय छपा हुआ स्थान उपलब्ध कराना चाहिए पीने के लिए स्वच्छ पीने का पानी उपलब्ध कराना चाहिए अतिरिक्त नर को अलग से रखकर पाला जा सकता है रात्री के समय सभी ग्रोवर को प्रर्याप्त स्थान उपलब्ध कराया जाना चाहिए तथा शत्रुओं से रक्षा की जानी चाहिए। सभी चूजों को छः सप्ताह के बाद दिन में खुले आंगन में छोड देना चाहिए रात्री के समय प्रर्याप्त स्थान वाला दडबा उपलब्ध होना चाहिए एक दडबे में 12–15 चूजों। ग्रोवर का आसानी से रखा जा सकता है अतिरिक्त नर पक्षी भी अलग से बाजार के लिए पाले जा सकते है रात्री का स्थान सूखा तथा आरामदायक व अच्छे वायु गमन वाला होना चाहिए।

13. रात्रि के लिए आदर्श आवास व्यवस्थाः–

1. विपरीत मौसम से सुरक्षा
2. शिकारी पक्षीयों से सुरक्षा

3. सभी को प्रर्याप्त स्थान उपलब्ध कराना
4. रात्री के समय उपयुक्त वायु का आवागमन
5. स्वच्छ वातावरण
6. बिछावन से अच्छा खाद बनाना
7. बिमारियों का खतरा कम करना

14. रात्रि आवास बनानाः– रात्री आवास के लिए स्थानीय घास फूस का उपयोग करना चाहिए रात्री आवास सदैव उचे स्थानो पर बनाना चाहिए अण्डे देने वाली मुर्गीयों के लिए अन्धकार वाले तथा उँचे स्थानों का चयन करना चाहिए यदि संभव हो तो वार्ड के अन्दर रोशनी का उचित प्रबन्ध करना चाहिए रात्री विश्राम के अन्दर कोई कील आदि नही हो दस मुर्गीयों के लिए 4.0x3.0x3.5 feet and 2.0 feet जमीन से उपर उठा हुआ होनी चाहिए दाना खाने के लिए पिंजरे के अनुसार एक फीडर लगा होना चाहिए दाना खाने के लिए अलग से एक स्थान चुनना चाहिए।

15. बैकयार्ड मुर्गियों की खिलाई–पिलाई का प्रबंध :

बैकयार्ड मुर्गियों के भोजन के लिए रसोई के अवशेष (अनाज, दालें, रोटी आदि) तथा हरे पते (रिजीका, बरसीम, हरी सब्जियों व पेड़ों के पत्ते) आदि के अलावा सन्तुलित राशन के लिए निम्नलिखित अवयवो को मिलाना चाहिए

अवयव	0–8 सप्ताह की आयु के चूजे	9–20 सप्ताह की आयु की मुर्गी	20 से अधिक सप्ताह की आयु की मुर्गी
मक्का	52	45	46
सोयाबीन	18	–	15
मूंगफली का तेल	13	13	8
चावल की पोलिस	–	35	–
तेल रहित चावल की पालिस	15	–	22
मच्छली की मिल	–	06	–
लाइम स्टोन	–	–	07
डाइकैल्शियम फास्फेट	2	1	2
नमक (ग्राम)	200	–	300
विटामिन(ए.बी.डी.के.ग्रा.)	15	15	15
बी काम्पेक्ष	20	20	20
विटामिन बी12	15	–	–
ट्रेस मिनरल (ग्राम)	50	50	50
कोकसिडियास्टेट		–	–

16. मुर्गियों के लिए स्थान की आवश्यकता : – शैड की उचाँई 10–12 फीट बीच में तथा 8–10 फीट साइड में रखनी चाहिए शैड की दीवार 2–3 फीट तथा उपर मुर्गी जाली लगा दे फर्श पक्का रखे शैड के पास की जगह मुर्गीया के घुमने के लिए अवश्य छोड देवे। बैकयार्ड मुर्गियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए उचित स्थान की आवश्यकता होती है कभी भी कम स्थान पर अधिक मुर्गियों को नहीं रखे, अन्यथा भीड़ के कारण मुर्गियों के स्वास्थ्य तथा उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। बैकयार्ड एक मुर्गी के लिए दिया जाना वाला स्थान निम्नलिखित है :

आयु (सप्ताह में)	फर्श पर दिया जाने वाला स्थान (वर्ग मीटर में)	दाना खाने के लिए बर्तन पर स्थान (सेमी.)	पानी पानी के लिए स्थान (सेमी. में)
0–4	0.50	2.50	1.50
4–8	1.00	5.00	2.00
8–12	2.00	6.50	2.50

17. वायु का आवागमनः– मुर्गियों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए वायु का आवागमन उत्तम होना चाहिए कभी भी कम स्थान में अधिक मुर्गियों को नहीं रखना चाहिए भीड के कारण कार्बनडाइ–ऑक्साइड व अमोनिया का उत्पादन होने लगता है तथा ऑक्सीजन की कमी होने लगती है जिसका मुर्गियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है अच्छे वायु आवागमन के लिए निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए।

1. रोशनदान उचित उँचाई पर अवश्य बनाये।
2. खिडकियों के उपर जाली की प्रतिदिन सफाई करे।
3. मुख्य दरवाजे के उपर जाली का कुछ भाग रखे।
4. प्रत्येक कमरे में उचित जगह के अनुसार मुर्गिया रखें।
5. एग्जास्ट पंखे यदि आवश्यकता हो, तो अवश्य लगायें।

18. आवास में बिछावन प्रबंध :

मुर्गियों के आवास के अन्दर लकडी का बुरादा, गेहूँ का भूसा, चावल का छिलका आदि का बिछावन प्रयोग में लिया जा सकता है, बिछावन सदैव सूखा रहना चाहिए, बिछावन को सूखा बनाये रखने लिए दो या तीन बार होइंग करनी चाहिए। आवास के अन्दर बिछावन की मोटाई 6–9 इंच होनी चाहिए, बिछावन के उपर दाने का बर्तन (फीडर) तथा पानी के बर्तन आवश्यकतानुसार रखने चाहिए, पानी के बर्तन सदैव 90 प्रतिशत क्षमता तक ही भरने चाहिए, पानी के बर्तन सदैव बाहर रखकर ही भरने चाहिए। गर्मियों में यदि तापमान अधिक रहता है, तब 3–4 इंच बिछावन हटाकर बाहर निकाल देना चाहिए, यदि बिछावन का प्रबंध अच्छे ढ़ंग से किया जाये, तो बिमारियों का आगमन मुर्गियों में कम से कम होगा।

19. बैकयार्ड मुर्गियों से अधिक उत्पादन लेने के लिए स्वास्थ्य प्रबंध : –

चूजों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए, आठ सप्ताह की आयु तक उत्तम प्रबंध करना अत्यन्त आवश्यक है, चूजों की अच्छी बढ़वार के लिए प्रमाणित स्त्रोत से ही फीड खरीदना चाहिए,

यदि बढ़वार कम हो रही हो, तब उत्तम स्त्रोत से फीड सप्लीमेन्ट दिये जा सकते है। चूजों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन ब्रूडर हाउस का निरिक्षण करना चाहिए, प्रथम आठ सप्ताह तक तापमान, वायु का आवागमन तथा बिछावन में नमी को विशेष तौर पर ध्यान में रखना चाहिए। चूजों की बढ़वार के लिए प्रोटीन की प्रतिशत का फीड में अवश्य जांच करा लें, मुर्गियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवास में उचित स्थान प्रदान करना चाहिए। अच्छे अण्डे उत्पादन के लिए फीड सदैव उत्तम श्रेणी का ही प्रयोग करें। यदि प्राकृतिक खाद्य संसाधन प्रर्याप्त है तब 10–20 उन्नत नस्ल की मुर्गीयाँ खुले मैदान में रखकर पाली जा सकती है तथा लगातार अण्डो का उत्पादन लिया जा सकता है लेकिन यदि अण्डो कर जगह माँस का उद्देश्य है तब मुर्गीयों को सघन पद्धति के अनुसार सभी इनपुट देना पडती है परिणाम स्वरूप बूडिंग की प्रक्रिया अच्छे ढंग से करनी चाहिए बूडिंग के पश्चात् ग्रोवर को खुले छोड देना चाहिए।

20. सफल बैकयार्ड पोल्ट्री के लिए चूजों में निम्नलिखित टीकाकरण अवश्य करवायें :

आयु	टीके का नाम	बीमारी का नाम	मात्रा	लगाने का तरीका
01 दिन	HVTMD Vaccine	मेरक्स	0.2 ml	S/C or I/M
4–7 दिन	Lasota	रानीखेत	One drop	Eye or Nostril
14–18 दिन	Intervediate Plus	गम्बोरो	1.0 ml	पीने के पानी में
30–35 दिन	Lasota	रानीखेत	One drop	आंख/नाक में
6–7 सप्ताह	Chicken Embryo Adopted	मुर्गी माता	0.5 ml	पंख की शिरा में
8–9 सप्ताह	Strain Killed Vaccine	रानीखेत	0.5 ml	S/C or I/M

21. उन्नत बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए निम्नलिखित बाते अवश्य अपनायें :

1. अच्छी नस्ल की मुर्गी के बच्चे/चूजे प्रमाणित हेचरी से लें।
2. सभी वैक्सीन सही समय पर लगवायें।
3. केवल प्रमाणित ब्राण्ड के मुर्गी दाने ही खरीदें।
4. चूजों व मुर्गियों के लिए सूखे, आरामदायक आवास उपलब्ध कराने चाहिए।
5. आवास में कम जगह में अधिक मुर्गियों को नहीं रखें।
6. अलग–अलग आयु की मुर्गियों अलग जगह रखें।
7. यदि कोई मुर्गी अस्वस्थ प्रतीत हो, तो उसे अलग कर दें तथा अनुभवी चिकित्सक से उपचार करायें।
8. दाने के व पानी के बर्तन प्रत्येक दिन साफ करें।
9. बाहरी व्यक्तियों का कम से कम आवागमन होना चाहिए।
10. मुर्गियों के आवास सुरक्षित होने चाहिए, आवास के आसपास मुर्गियों के शत्रु जैसे कुत्ते, बिल्ली, नेवले आदि न हों।
11. विषम मौसम में आवास का प्रबंध विशेष रूप से करना चाहिए।

12. अधिक गर्मी या सर्दी में मुर्गियों के अच्छे स्वास्थ्य तथा उत्पादन के लिए उन्नत प्रबंध करना चाहिए, आवास के पास वायु रोधक पेड़ो की पंक्ति अवश्य लगा देनी चाहिए, अधिक गर्मी में पानी का छिड़काव भी किया जाना चाहिए जिससे तापमान कम किया जा सके तथा मुर्गियों को गर्मी से राहत मिल सकें।

22. बैंकयार्ड पोल्ट्री के लिए महत्वपूर्ण बातें : –

1. उच्च रोग प्रतिराधक क्षमता वाली द्विद्देशीय नस्ले उन्नत हेचरी से प्राप्त करें।
2. सभी टीके समय पर अवश्य लगवा दे।
3. पीने का पानी स्वच्छ एवं ताजा हो।
4. मुर्गी दाना सदैव प्रमाणित स्त्रोत से ही ले मुर्गीदाना फफूद रहित तथा उच्च गुणवता वाला हो।
5. कम स्थान में अधिक मुर्गीया नही रखें ।
6. अलग–अलग आयु की मुर्गियों को एक साथ नहीं रखें।
7. आवास उँचे स्थान पर बनाये तथा आवास में हवा का आवागमन सदैव उत्तम होना चाहिए।
8. मुर्गी दाने व पानी के बर्तन सदैव जीवाणु रहित होने चाहिए उचित मात्रा में जीवाणु रहित घोल प्रयोग करें।
9. मुर्गी आवास को समय समय पर संक्रमण रहित कर दे।
10. बाहरी लोगो तथा बाहरी पशु जैसे कुत्ता, बिल्ली पर पूर्णत रोक होनी चाहिए।
11. बाहरी लोगों के अन्दर आने से पहले फुटबाय की सुविधा होनी चाहिए।
12. अधिक ठण्ड के लिए तथा अधिक गर्मी के लिए विशेष प्रबन्ध विशेषज्ञ की सलाह से करें।

23. बैकयार्ड पोल्ट्री अपनाने का कारण :

1. कम से कम पूंजी व इफास्ट्रक्चर की आवश्यकता।
2. परिवार के सदस्यों के पोषण स्तर में सुधार।
3. कम खर्च पर उत्तम श्रेणी के अण्डे एवं मांस घर के पीछे सदैव उपलब्ध होना।
4. परिवार के सभी सदस्यों का अतिरिक्त समय का सद्उपयोग।
5. घर के खाद्य अवशेषों (किचिन वेस्ट, अनाज वेस्ट, सब्जी, फलों के वेस्ट आदि) का सदुपयोग।
6. द्विउद्देशीय नस्लों की वर्षभर उपलब्धता।
7. द्विउद्देशीय नस्लों की उच्च रोगप्रतिरोधकता क्षमता।
8. उच्च श्रेणी की मुर्गी की खाद की उपलब्धता।
9. पर्यावरण को कम से कम हानि।
10. कम से कम जोखिम अधिक से अधिक लाभ।

24. अण्डे का संगठन :

अण्डे का हिस्सा	कुल वजन प्रतिशत	पानी प्रतिशत	प्रोटीन प्रतिशत	वसा प्रतिशत

सम्पूर्ण अण्डा	100	65	13	11
सफेद भाग	58	88	13	—
पीला भाग	31	48	18	33

25. मुर्गियों में बीमारियों का प्रबंध :

मुर्गियों मे विषाणुओं से होने वाली बिमारियों जैसे मेरस्क, चेचक, गम्बोरो, रानीखेत आदि है, इनकी रोकथाम के लिए साफ–सफाई का ध्यान रखना चाहिए तथा समय पर उचित टीकाकरण अवश्य करायें, मुर्गियों में होने वाली मुख्य जीवाणुओं से होने वाली बिमारिया जैसे संक्रमित कोराईजा, स्ट्रैपटोकोकल संक्रमण, फाअल कोलरा और माईकोप्लाजमोसिर आदि है इनकी उचित रोकथाम के लिए साफ–सफाई तथा समय पर टीकाकरण कराना चाहिए मुर्गियों में होने वाली मुख्य प्राटोजोवल बिमारी कोकसीडियोसिस है जिसके अच्छे प्रबन्ध के लिए बिछावन में नमी को नियंत्रित रखें तथा उचित दवाई की मात्रा पानी के साथ देवे।

26. बैंकयार्ड पोल्ट्री की समस्याऐ : –

1. **उन्नत नस्लों की कमी :** – देश के सभी क्षेत्रों में उन्नत नस्ले उपलब्ध नहीं है अतः लघु सीमान्त किसानों एवं भूमिहीन श्रमिकों को सदैव यह समस्या आती है हर क्षेत्र के लिए उन्नत नस्ले उपलब्ध होनी चाहिए
2. **अधिक मत्युदर होना :** – चूजों की प्रारम्भिक अवस्था यानी प्रथम तीन सप्ताह में मत्युदर अधिक होती है। तापमान में उतार चढ़ाव के कारण चूजों में मत्यु दर अधिक होती है मत्युदर रोकने के लिए उचित ज्ञान तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
3. **स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं :** – मुर्गियों के अच्छे स्वास्थ के लिए चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाए प्रर्याप्त नहीं है अच्छे स्वास्थ्य के लिए निरन्तर उचित स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।
4. **उचित आवास की कमी :** – यदि आवास अच्छा नहीं होगा मुर्गियों का स्वास्थ्य तथा उत्पादन कम हो जायेगा।

27. बैंकयार्ड पोल्ट्री प्रश्न/अन्दर : –

1. **बैंक यार्ड पोल्ट्री ?**

   यह कम खर्च से शुरू होने वाला व्यवसाय है सभी आवश्यक जैसे चूजें, दाना, दवाई तथा प्रशिक्षण सभी स्थानों पर उपलब्ध है।
2. **बैंकयार्ड पोल्ट्री की नस्लों का क्या महत्व है ?**

   बैंकयार्ड के लिए दर्जनों नई–नई नस्ले केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान इज्जत नगर, बरेली व अन्य कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है।
3. **बैंकयार्ड पोल्ट्री नस्लों की क्या विशेषता है ?**
   1. इनमें अत्यधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है।
   2. सभी जगह आसानी से उपलब्ध है।
   3. अधिक अण्डे एवं माँस मिलता है।
   4. अण्डा उत्पादन के बाद माँस में अधिक मुल्य मिलता है।
   5. अण्डो का मूल्य सामान्य अण्डो से दो से तीन गुणा अधिक मिलता है।

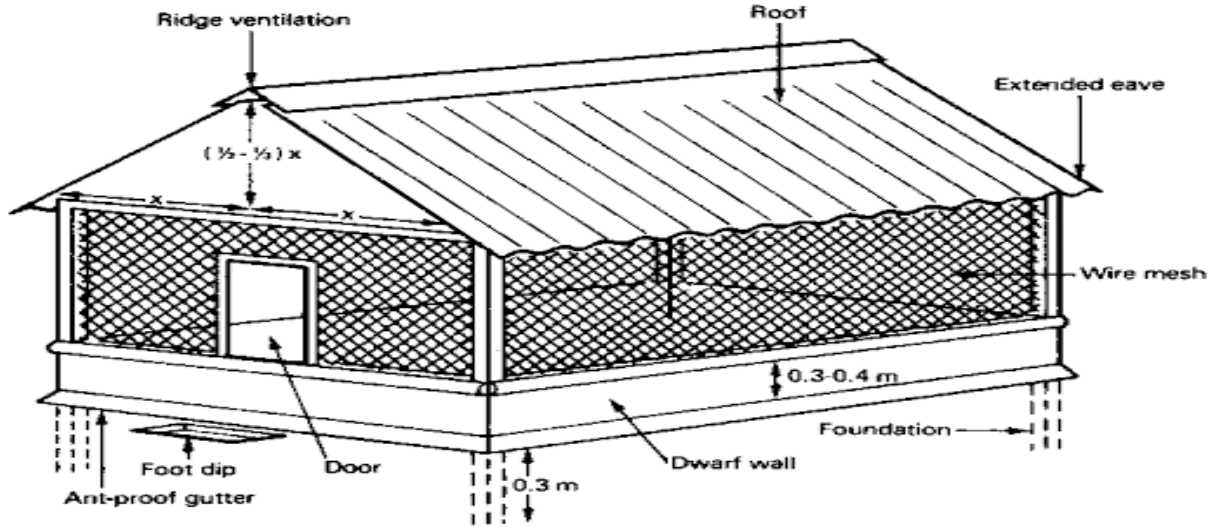
Ridge ventilation
Roof
Extended eave
(⅓-⅓) x
x
x
Wire mesh
0.3-0.4 m
Foundation
Foot dip
Door
Dwarf wall
Anti-proof gutter
0.3 m

© BCCL 2021. ALL RIGHTS RESERVED.